डॉ. पंकज कर्ण

डॉ. जे एम कॉलेज, मुज़फ़्फ़रपुर

हिन्दी की पानी से सींची हुई इस सदी की ग़ज़लें

महान चिंतक बारबरा टचमैन ने कहा है:- 'किताबें सभ्यता की वाहक हैं। बिना किताबों के इतिहास चुप है, साहित्य मूर्ख, विज्ञान पंगु एवं विचार और सिद्धांत गतिहीन हैं।"

इस परिप्रेक्ष्य में देखें तो सदियों से सृष्टि के संवर्धन के साथ-साथ सृजन-कर्म होता रहा है। इसी सृजन के दम पर किसी भू-खण्ड के निवासी को उसकी भाषा, संस्कृति, सभ्यता, शिक्षा, संस्कार एवं नैतिकता पर स्वाभिमान एवं सात्विक गर्व होता है। दुनिया की तमाम भाषाओं में हिन्दी न सिर्फ भाषा बल्कि भारतीय सभ्यता-संस्कृति की संवाहिका है। उसका साहित्य वैश्विक स्तर पर आम-जन के बीच आत्मीय संबंध स्थापित करने के साथ-साथ संस्कृति से जुड़ने का सशक्त माध्यम है।

आज हिन्दी की विभिन्न विधाओं में बहुत कुछ रचा जा रहा है। अकूत संभावनाओं से भरी हिन्दी जन-जीवन की धड़कनों को व्यक्त कर नित नए-नए प्रतिमान गढ़ रही हैं। विलासिता के पीछे भाग रहे लोगों को संस्कृति से जोड़ा जा रहा है और इसके लिए हिन्दी साहित्य की आज सबसे ज्यादा लोकप्रिय विधा ग़ज़ल का सहारा लिया जा रहा है। हिन्दी ग़ज़ल की पुस्तकों की बाढ़ आ गई है और इसी बाढ़ के बीच बारबरा टचमैन के सपनों की उड़ान को पंख और शाश्वत ग़ज़लों का आसमान दिया जा रहा है।

कभी कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में हिन्दी के प्राध्यापक रहे डॉ. आर.एस. मैकग्रेगर की मानें तो:- 'हिन्दी दुनिया की महान भाषाओं में एक है। हिन्दी को समझने के लिए हिन्दी का ज्ञान अनिवार्य है। आज हिन्दी का महत्व और भी इसलिए बढ़ गया है क्योंकि भारत आज शिक्षा उद्योग और तकनीकि के हिसाब से दुनिया के अग्रणी देशों में है।"

इस तथ्य को समझने में कोई अतिशयोक्ति नहीं कि हिन्दी भाषा आज अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त माध्यम है। कृत्रिम बौद्धिकता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) की स्वीकार्यता के दौर में वैश्विक स्तर पर भले ही अंग्रेज़ी की अनिवार्यता बढ़ी है, बावजूद इसके इमोशन की अभिव्यक्ति जो आम-पाठक के भीतर किसी पहाड़ की ओट से उतरते हुए पानी की तरह सीधे अंतर्मन में प्रवेश करती है, इसका सबसे सशक्त माध्यम हिंदी ही है। शायद यही वजह है कि इस सदी

में नवांकुर से पौधे और पेड़ के रूप में पनप रहे ग़ज़लकारों ने हिन्दी में ग़ज़ल कहने का साहसिक बीड़ा उठाया है उसमें उन्हें आकाश भर सफलता हासिल हुई है। हिन्दी भाषा के झरते पानी से सींची हुई ग़ज़लें आज वैश्विक स्तर पर अपना विस्तार पा चुकी हैं और उसकी स्वीकार्यता से मुँह नही मोड़ा जा सकता है।

वस्तुतः ग़ज़ल उर्दू साहित्य की ऐसी विधा है जिसमें शब्दों की ऐसी कारीगरी होती है जिसे जानने-समझने के लिए ग़ज़ल जैसी आत्मा, रस, छंद, अर्थ और रूप की महत्ता के साथ-साथ विशुद्ध मिज़ाज का होना ज़रूरी है। एक शायर के मिज़ाज से जो जनमता है वह पत्थर के टुकड़े सरीखा होता है परन्तु अभिव्यक्ति के शिल्प के सहारे उसे मूर्त आकार दिया जाता है। आम -जन के जीवन की तमाम जटिलताओं के बावजूद प्रेम एवं अस्तित्व के अहसास को बचाए रखने की दृढ़धर्मिता और मृत्यु के भयाक्रान्त हाथों से खुद को बचा लेने की उत्कंठा ग़ज़ल की तासीर है। मस्ती और सादगी का आवरण ओढ़े ग़ज़ल जब शायरों के कलम चढ़ती है तब प्रेम, सौहार्द्र, भाईचारा और अदब, जातीय दीवारों को लांघकर संस्कृति और संस्कार का संदेश लेकर पाठकों की चौखट तक आती है। सचमुच ग़ज़ल ऐसी विधा है जिसमें लय है, आवाहन है, पीड़ा है, दर्शन है, प्रेम है एवं मानवीय संवेदना का सूक्ष्म विवेचन है जिससे मन का हर तार झंकृत हो जाता है।

जहाँ तक हिन्दी जुबान में कही गई ग़ज़ल की शैली का सवाल है दुष्यन्त के बाद उसके तेवर बदले हैं। शेर की दो पंक्तियों में अभिव्यक्त की गई एक अलहदा तरीके की रवानी, लोच और बांकपन भरे कथ्य की कलात्मक प्रस्तुति ने शायरों को न सिर्फ आकर्षित बल्कि प्रभावित भी किया है। कलम की नोंक से ग़ज़ल उगलने वाले इस सदी में पनपे शायर जिनके द्वारा नव-ग़ज़ल का इतिहास गढ़ा जा रहा है, ने अपनी ग़ज़लों में शोख़ी और नजाकत को अपना विषय-वस्तु तो बनाया ही है साथ ही दुष्यन्त की आक्रामकता, सियासत पर प्रहार, समाज पर व्यंग्य और तीक्ष्ण तेवर को भी इन्होंने अपनी धारदार आवाज़ दी है जिनमें समकालीन जीवन का यथार्थ, जनवादी तेवर और राजनीतिक विसंगतियों पर चोट के साथ-साथ दूब पर खाली पाँव चलने का अहसास तथा प्रेम के पर्वत से झरते पानी को दिलों की गहराई तक प्रवेश कराने वाली रूमानी भावुकता को भी आप भीतर तक महसूस करेंगे।

बीसवीं सदी के क़ब्र पर उपजे इक्कीसवीं सदी के इन ग़ज़लकारों ने भूकंप एवं साम्प्रदायिक सद्भाव का विकृत रूप, दो दशकों के बीच बदलते राष्ट्र के बीच बदलती पाबंदियाँ, कोरोना की त्रासदी, रूस-यूक्रेन एवं इजरायल-हमास के युद्ध की विभिषिका से अंतरमन को झकझोर देने वाली संवेदना तक को महसूस किया है। इनकी ग़ज़लों में बाढ़ की विभीषिका में लील होती मानवीयता, बच्चों की आँखों में बसते-बिखरते सपने, युवाओं की बेरोजगारी, हाशिये की पीड़ा एवं सत्ता के मद में चूर व्यवस्था की परिकल्पना भी देखेंगे और जिन्दगी की जद्दोजहद से दो-चार हो रहे जीवन के बीच स्याह रात में भी प्रेम की फूटती कोंपले, सौन्दर्य का बोध, समय, संबंध,

करुणा एवं पीड़ा की अगुआई करते शेर भी पढ़ेंगे तो चाँद पर हमारी धमक से फूटी हुई ग़ज़लें भी। ये ग़ज़लें वक्त की औकात का सटीक बयान भी करती हैं। सदी के इन रचनाकारों की ग़ज़लों को पढ़ते-समझते इसका सहज अंदाज़ा लगाया जा जिसकी बानगी इस प्रकार है:-

अनिता सिंह

जीवन, समाज और समुदाय के सच को अपनी लेखनी से आकार देती अनिता सिंह की ग़ज़लें समय सापेक्ष में जीवंत हैं। उनका यह शेर देखें:-

हम तलक आती नहीं है क़ैद में है रोशनी
पड़ रगड़ से मुफलिसी की हमको जलना आ गया

अभिनव अरुण

महत्त्वहीन हो रहे समय में विद्रूपता के ढांचे को तोड़ती अभिनव अरुण की ग़ज़लें विश्वास का किला गढ़ने की बात करती हैं। यह शेर देखें:-

हक़ीक़तों की जमीं पर जो चल के देखते हैं
वही कमान से बाहर निकल के देखते हैं

अभिषेक सिंह

अभिषेक सिंह की ग़ज़लें ग्राम्य जीवन एवं आम आदमी के जीवन संघर्ष को बड़ी बेबाकी से चित्रित करता है जिसे पढ़ कर पाठक ग़ज़ल की रोशनी एवं जज्बात से भर जाते हैं। उनका शेर देखें:-

कस्बे से था ज़रा सा जो हटकर बना हुआ
जाने कहाँ वो गुम हुआ पोखर बना हुआ

अवनीश त्रिपाठी

सामाजिक जद्दोजहद एवं वास्तविक भावों को रचनेवाले अवनीश त्रिपाठी ने हिंदी ग़ज़ल की भूमि को अपेक्षाओं से भर दिया है। छोटी बहर में कहे गए उनके इस शेर में स्व का तेवर दीखता है:-

आर खड़ा हूँ, पार नहीं हूँ
बिकने को तैयार नहीं हूँ

अविनाश भारती

हिंदी ग़ज़ल की सत्ता में धीरे-धीरे परंतु निरंतर अपनी दमदार उपस्थिति दर्ज़ करते हुए अविनाश भारती ने ज़माने के सच को अपनी ग़ज़लों में समाया है। उनका यह शेर देखें:-

सुना है लोग करते हैं बहुत ही याद शिद्दत से
चलो हम भी खुशी से ये ज़माना छोड़ देते हैं

डॉ आरती कुमारी

निजी जीवन के महसूसे गए खालीपन को डॉ आरती कुमारी ने स्त्री को प्रतीक मानकर उसकी पीड़ा और साहस को ग़ज़ल में ऐसे ढाला है जो मर्म को स्पर्श करती हैं। शेर देखें:-

बस मुश्किलों का नाम है औरत की ज़िंदगी
मज़दूर या ग़ुलाम है औरत की ज़िंदगी

आराधना प्रसाद

प्रेम और दर्शन का उत्सव मनाती आराधना प्रसाद की ग़ज़लें प्रभावित करती हैं। शेर देखें:-

बना तो दूँ तुम्हें आवारा बादल
कहो क्या टूटकर बरसा करोगे

आलोक श्रीवास्तव

आलोक श्रीवास्तव ने ग़ज़ल में संबंधों की महत्ता स्थापित कर हिंदी ग़ज़ल को मधुमय बनाया है साथ ही समय की चुनौती और ताप को निश्छल संवेदना का प्रवाह भी दिया है। बानगी देखें:-

मुझे सिरे से पकड़ कर उधेड़ देती है
मैं एक झूठ वो सच्चे सबूत जैसी है

उत्कर्ष अग्निहोत्री

दोषपूर्ण व्यवस्था के विरुद्ध अस्तित्व को कायम रखने की नसीहत देता उत्कर्ष अग्निहोत्री का यह शेर पाठकों को ग़ज़ल रुचि का आस्वादन कराता है:-

इस तरह जीने का सामान जुटाता क्यों है
खर्च करना ही नहीं है तो कमता क्यों है

ए. एफ़. नज़र

दरकते संबंधों को बचाने की ज़िद एवं मूल्य स्थापित करती ए. एफ़. नज़र की ग़ज़लों में सकारात्मक प्रवाह है। उनका शेर देखें:-

एक मुद्दत से न ली अपने बुज़ुर्गों की ख़बर
यूं तो वो सारे ज़माने की ख़बर रखता है

एम. आर. चिश्ती

बिहार जैसे समृद्ध प्रदेश को राज्य-प्रार्थना देने वाले शायर एम. आर. चिश्ती की रूमानी एहसास से भरी ग़ज़लें कालजयी होने का माद्दा रखती हैं। शेर देखें:-

यारो चलो कहीं से बुला लाएं हम उसे
जिसके बग़ैर जीने की आदत नहीं रही

ऋतुराज

हिंदी ग़ज़ल में आस्था रखने वाले ऋतुराज के लिए ग़ज़ल पूजा है। लक्ष्य की ओर बढ़ने वालों के लिए यह शेर कितना माकूल है, देखें:-

वक्त उनको नहीं है रुकने का
जिंदगी भर जो चलते रहते हैं

के पी अनमोल

के पी अनमोल की गजलों को पढ़ना जीवन की हकीकत से रु-ब-रु होना है। उनकी प्रयोगवादी ग़ज़लें उपेक्षा में अपेक्षा का आस्वादन कराती हैं और पाठकों के भीतर आसानी से प्रवेश करती हैं। शेर देखें :-

रोशनी को साथ लेकर आ रही किरणों की खेप
कब अंधेरे का घटेगा कद, नहीं बतला सकी

गरिमा सक्सेना

गरिमा सक्सेना की ग़ज़लों में मानवीय सरोकार का सहज-संतुलित रूप देखा जा सकता है। उनके इस शेर में उनकी शायरी के प्रति समर्पित एवं लक्षित जीवन को अनुभूत किया जा सकता है:-

चांद, सूरज थे बने सबके लिए इक से यहाँ
रोशनी फिर क्यों बपौती महलों की होने लगी

चाँदनी समर

चाँदनी समर गंभीर ग़ज़ल कहन का उभरता हुआ मजबूत नाम है। अपनी ग़ज़लों में समय को क़ैद करना वो जानती हैं। शेर देखें :-

महल दो महल हैं बने कागजों पर
ज़मीं पर भी एक घर बनाओ किसी दिन

डॉ जियाउर रहमान ज़ाफ़री

मगध विश्वविद्यालय के मिर्ज़ा ग़ालिब महाविद्यालय में हिंदी के प्राध्यापक सह ग़ज़लकार-समालोचक डॉ जियाउर्रहमान ज़ाफ़री जिन्होंने हिंदी-उर्दू अदब के ग़ज़ल की आँच को ताज़गी की हवा दी है, अपनी गज़लों में परंपरा का निर्वाह करते हैं। यह शेर देखें:-

ग़ज़ल पनघट पे शर्माती थी कल तक
वो अब शॉवर में कैसे आ गई है

दिलीप दर्श

ग़ज़ल में जनवादी तेवर को आवाज़ देने वाले शायरों में आज दिलीप दर्श का नाम शुमार है। अपनी ग़ज़ल चेतना को उन्होंने बड़े सलीके से इस शेर में ढाला है:-

चोट पर हम बर्फ़ डाले जा रहे हैं
दर्द को बेहतर संभाले जा रहे हैं

धरवेंद्र सिंह 'बेदार'

विसंगतियों को भुलाकर समानता को प्रश्रय देने की कोशिश करती धर्मेंद्र सिंह 'बेदार' की ग़ज़लें स्पंदित करती हैं। शेर देखें:-

कभी तो ऐ हुकूमत ले खबर तू इन गरीबों की
गरीबों के भी तो कुछ ख्वाब कुछ अरमान होते हैं

नज़्म सुभाष

सियासी काल कोठरी पर चोट करती नज़्म सुभाष की ग़ज़लें आम जन के हक़ की बात करती हैं। बानगी देखें:-

सच कहें खलती बहुत हैं आमजन की चुप्पियाँ
ध्वंस कर देती है दावत जब सियासी बिजलियाँ

नीलू चौधरी

भावनाओं और संबंधों को संजोए नीलू चौधरी की ग़ज़लें इन्हें जीने का हौसला देती हैं। देखें:-

चमन उजड़ा बसेरा छिन गया जब
परिंदों का वनों में जान है क्यों ?

पंकज कुमार पाण्डेय

बदलते परिवेश में आज सबसे ज़्यादा विश्वास का गला घोंटा गया है। आप जिस पर टूटकर विश्वास करते हैं वही आपके विश्वास का हंता होता है चाहे वह प्रेम हो या सांसारिक जीवन। पंकज कुमार पाण्डेय का यह शेर इसी की तरफ इशारा करता है:-

नहीं चाकू से डरता हूँ न ही तलवार से डर है
सनम मुझको फ़कत दुनिया में तेरे प्यार से डर है

प्रवीण पारिक 'अंशु'

प्रेरणा से लबालब प्रवीण पारिक 'अंशु' जी की ग़ज़लें प्रभावित करती हैं। ऐसा लगता है जैसे आज कट-थ्रोट प्रतिस्पर्धा की पीड़ा ने ही उनके इस शेर को जन्म दिया है:-

हमारे हौसलों को डगमगाने आ गई दुनिया
चढ़े जैसे ही हम पर ऊपर गिराने आ गई दुनिया

भाऊराव 'महंत'

जीवन की बेचैनियों को संबल देती भवराव 'महंत' की गजलें समय के चेहरे पर लिखी इबारत की मानिंद है। शेर देखें:-

हो बनी फंदा फ़क़त उस डोर जैसी जिंदगी
जी रहा हर शख्श आदमखोर जैसी ज़िन्दगी

डॉ भावना

समकालीन हिंदी ग़ज़ल का चर्चित नाम डॉ भावना अपनी शर्त पर ग़ज़लों में अपनी बात कहने की बानगी तथा समय के साथ हो रहे मानवीय बदलाव को सूक्ष्मता से उकेरा है। डॉ भावना की ग़ज़लें उनके भा◌ोगे हुए यथार्थ का दस्तावेज़ है। वे कहती हैं:-

समुंदर से भी मोती छान लुंगी
किसी भी दिन अगर मैं ठान लूंगी

मनोज एहसास

मूल्यहीन होते समय में मनोज एहसास की मूल्यपरक ग़ज़लें इस समय का प्रतिमान स्थापित करती हैं जब वे कहते हैं:-

पीर को, अनुराग को, पछतावे को, संताप को
छोड़कर कैसे चलूँ मुश्किल में अपने आप को

माधुरी स्वर्णकार

प्रेम जीवन का सबसे बड़ा हासिल है। प्रेम के बिना शाश्वत जीवन की कल्पना बेमानी है। प्रेम की पीड़ा और संवेदना को माधुरी स्वर्णकार ने इस शेर में जैसे ढाला है वह प्रशंसनीय है:-

काश जो वक्त बुरा था उसे टाला जाता
दूर तक फिर तेरी राहों में उजला होता

रश्मि गुप्ता

रश्मि गुप्ता की ग़ज़लें प्रेम और विरह की अकुलाहट का अमूल्य संयोजन है। शेर देखें:-

हर एक शाम हर एक रात तन्हा-सी लगे
तेरे बगैर ये सारा जहान क्या होगा

राकेश रंजन

कोई भी रचनाकार अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज में दुश्मनी की जगह प्रेम का संदेश देते हैं। राकेश रंजन का यह शेर हमें यही संदेश देता है:-

रहमतों को रौंद कर ये जुल्मतें रह जाएँगी
गर मुहब्बत छोड़ दोगे नफ़रतें रह जाएँगी

और फिर यह शेर भी देखें:-

ख़ाक हो जाएँगे ख़ंजर ख़त्म होंगी वहशतें
उल्फ़तें थीं उल्फ़तें हैं उल्फ़तें रह जा

रामनाथ 'बेख़बर'

जीवन के विविध रंगों को सहेजकर गजलों की दुनिया से गुज़ारने वाले रामनाथ 'बेख़बर' सदी के विध्वंस और निर्माण की चिंता करते हैं। देखें:-

रुला रही है न मालूम कितने वर्षों से
हमारे दिल में कई ज़ख्म ये सदी देकर

राहुल शिवाय

राहुल शिवाय की ग़ज़लें परिपक्व हैं। गाँव एवं शहर की रवायत से हासिल उम्र के मुठ्ठी भर पड़ाव में जो उन्होंने अनुभव का पहाड़ सहेजा है उसका प्रतिबिम्ब उनके शेर में स्पष्ट दिखाई देता है। देखें:-

गांव,घर, बस्ती, शहर सब कुछ वहीं पर रह गया
सिर्फ महंगाई बढ़ी इस वक्त की रफ्तार में

रेखा भारती मिश्रा

तमाम दलीलों के बावजूद आज भी हाशिये की स्थिति पूर्व की भाँति बरकरार है। भूखों के लिए लगातार लड़ने वाले तो अमीर हो जाते हैं परंतु भूखों की स्थिति बरकरार है। रेखा भारती मिश्रा का यह शेर इसका बयान है:-

है गरीबी का असर क्या पास आकर देखिए
मुफलिसी में जिंदगी को तो बिता कर देखिए

विकास

मानवीयता के पक्ष में खड़ी विकास जी की ग़ज़लें जीवन की हकीकत से रु-ब-रु कराती हैं। शेर देखें:-

लाख मना करता हूँ लेकिन एक पड़ोसी
खाना लाकर घर के अंदर रख देता है

डॉ विनम्रता

ग़ज़लतराशों की दुनिया में उतरी डॉ विनम्रता हिंदी ग़ज़ल का नया नाम है जिनकी ग़ज़लों की कोंपले, फल की संभावनाओं के साथ आई हैं। शेर देखें:-

नक़ाबों में छिपे चेहरों से थोड़ा फ़ासला रखना
गिरो जिस दम तो फिर उठने का दिल में हौसला रखना

शुभम श्रीवास्तव ओम समय का नब्ज़ पकड़ती शुभम श्रीवास्तव ओम की ग़ज़लें ज़िन्दगी की बेबाकी का बयान करती हैं। काल के क्रूर मज़ाक ने भले ही इन्हें असमय लील लिया हो परन्तु बहुत कम समय की इनकी ग़ज़ल-यात्रा ने एक ऐसा रास्ता बनाया है जिसे पकड़कर किसी मंज़िल को अवश्य तय किया जा सकता है। शेर देखें:-

एक फंदे के लिए पूरी सलाई खोल दी
आज जादूगर के कह देने पे मुट्ठी खोल दी

श्वेता ग़ज़ल

विद्रूप समय का चेहरा दिखाती श्वेता ग़ज़ल का यह शेर हमें सचेत करती हैं साथ ही सोंचने पर विवश करती हैं कि बेटियों के लिए यह कैसा समय आ गया है:-

बंद कर लो अपने घर की खिड़कियाँ
गुमशुदा होने लगी है लड़कियाँ

संजीव प्रभाकर

संजीव प्रभाकर ने अपनी ग़ज़लों में हाशिये के जीवन का दर्द और जिजीविषा को बड़े ही तल्ख़ लहजे में पिरोया है। बानगी के तौर पर:-

मजाक लगती उन्हें गरीबी जिन्हें मयस्सर कबाब-बोटी
बड़ी मशक्कत के बाद आती हमारी थाली में नून-रोटी

सज्जन धर्मेंद्र

समय की ज़रूरतों को शब्द देती सज्जन धर्मेंद्र की ग़ज़लें ग़ज़ल के मूल्य को बचाने की कोशिश करती हैं। शेर देखें:-

ग़ज़ल कहनी पड़ेगी झुग्गियों पर कारखानों पर
ये फ़न वरना मिलेगा जल्द रद्दी की दुकानों पर

सत्यम भारती

छोटी बहर में कही गई सत्यम भारती की ग़ज़लें सामाजिक चेतना का वैशिष्ट्य निरूपित करती हैं। उनका यह शेर कितना लाजिमी है:-

बिखर रहा विश्वास आजकल
आम-जनों की आस आजकल

सत्यशील राम त्रिपाठी

आस्था, आकांक्षा, धैर्य एवं मौन से उपजी सत्यशील राम त्रिपाठी की ग़ज़लें सामाजिक रूढ़ियों के ख़िलाफ़ आवाज़ बुलंद करती हैं। शेर देखें:-

कई मौसम शहद जैसे अचानक चू के गुजरेंगे
मोहब्बत से मोहब्बत को अगर हम छू के गुजरेंगे

सत्येंद्र गोविंद

सत्येंद्र गोविंद ने संबंधों पर विश्वास के साथ हो रहे घात को अपनी ग़ज़ल का विषय बनाया है। बानगी देखें:-

दिल से दूना दुर्व्यवहार बताओ तो
ज़ालिम का ऐसा किरदार बताओ तो
सुदेश कुमार मेहर

सुदेश कुमार मेहर का यह शेर जीवन से हारने वालों को प्रेरित करने के लिए काफी है:-

इरादों के लिए कोई अकेला जा रहा होगा
किसी के हौसलों से ही अंधेरा जा रहा होगा

सुभाष पाठक ज़िया

सुभाष पाठक ज़िया न सिर्फ ग़ज़ल कहते हैं बल्कि जीते हैं। हाशिये के ख़्वाब को ग़ज़ल में उन्होंने इस प्रकार स्वर दिया है:-

गरीब आँख के घर में पले-बढ़े हैं ख्वाब
तभी तो नींद की क़ीमत समझ रहे हैं ख्वाब

सुमन आशीष

सुमन आशीष मूल्यपरक ग़ज़ल कहने के लिए प्रतिबद्ध दिखते हैं। इलेक्ट्रॉनिक गजट के द्वारा गटक लिए गए संवेदना को उन्होंने ऐसे उकेरा है:-

लिखावट देखकर उसकी वो चिट्ठी खोल दी मैंने
हृदय में बंद यादों की वो गठरी खोल दी मैंने

सुरेखा कादियान 'सृजना'

हिंदी ग़ज़ल के इस क्रांतिकारी समय में सुरेखा कादियान 'सृजना' की ग़ज़लें प्रेम की अनुभूति को मनुष्यता का दर्पण दिखाती हैं। शेर देखें:-

अश्क आंखों में लिए उससे बिछड़ना है मुझे
फिर सितम ये भी कि रोने से मुकरना है मुझे

सोनरूपा विशाल

सोनरूपा विशाल ने प्रेम की पवित्रता और विरह की पीड़ा को जिस तरह अपनी ग़ज़लों में ढाला है इसे इस सदी के धरोहर के रूप में संजो कर रखा जा सकता है। देखें:-

पहले खुद पर रंग लगाया जाता है
फिर औरों पर रंग चढ़ाया जाता है

हेमा सिंह

हेमा सिंह ने अपनी ग़ज़लों में समय की नब्ज़ को पकड़ा है। तमाम प्रयत्नों के बावजूद धरातल पर सच का सामना कर रही बेटियों की चिंता को इस प्रकार व्यक्त किया है:-

मुश्किलें हैं बहुत, किन्तु हारी नहीं
देश की बेटियाँ अब बेचारी नहीं

इस सदी के देश के इन ग़ज़लकारों के साथ-साथ उनकी भी चर्चा आवश्यक है जिनकी ग़ज़लों में आत्म -विश्वास है, अभिव्यक्ति की हूक है और समय से जूझते सवाल हैं जो हमें हिंदी ग़ज़ल के भविष्य को लेकर निश्चिंतता एवं आश्वस्तता का सुबूत देती हैं।

उनके फड़फड़ाते पंखों को उड़ने के लिए एक नए लहजे से लबरेज़ इस सदी का आसमान है जिसमें वो अपनी रचनात्मक आजादी से उड़ सकते हैं और अपनी अभिव्यक्ति से गज़लों का मीनार रच सकते हैं और अपना अरमान भर पंख फैलाकर धरती-आकाश को नाप सकते हैं जिनमे संजीव गौतम, राहुल कुम्भकार, डॉ मनोज आर्य, हँसमुख आर्यावर्ती, कुन्दन आनंद, गौतम राजर्षि, रामनाथ शोधार्थी, ज्ञान प्रकाश पाण्डेय, डॉ भावना कुंवर, अंजू केशव, स्वराक्षी स्वरा, डॉ भावना श्रीवास्तव, अनामिका सिंह, देवेश दीक्षित 'देव', विकास सोलंकी, राम सिंगार 'मलक', आकाश महेशपुरी, अलका वर्मा, गौतम राजर्षि, जयनित कुमार मेहता, मनीष 'मोहक', मनीष कुमार झा, डॉ. मनोज कुमार, माँगन मिश्र 'मार्त्तण्ड', माधवी चौधरी, डॉ रूपम झा, , विजय कुमार, प्रीति सुमन, मालिनी गौतम, संजू शब्दिता, राहुल द्विवेदी 'स्मित', लता जौनपुरी, नेहा कटारा पाण्डेय, पूनम यादव, नीरज कुमार 'निराला', संतोष सिंह शेखर आदि प्रमुख हैं।

इस तरह यह स्वीकार किया जा सकता है कि अपने सैकड़ों वर्षों की यात्रा में ग़ज़ल ने जिन-जिन दहलीजों पर दस्तक दिया है आप उनकी खूश्बू इन शायरों में महसूसेंगे। हमने युवा ग़ज़लकारों की प्रगतिशीलता को केन्द्र में रखकर हिन्दी ग़ज़ल की समृद्धि की ओर इशारा किया है जिनके हाथों ग़ज़ल की आनेवाली दुनिया सुरक्षित और संवर्धित है। इनकी ग़ज़लें उसूलों पर खरा उतरते आपके जेहन में महकेंगी। जिन्दगी की ताज़गी, संवेदना की गहराई और विचारों की ऊँचाई से रची गयी इनकी ग़ज़लें काल के भाल पर किया गया ऐसा हस्ताक्षर है जिसे पाकर आनेवाली पीढ़ी भी संपन्न ग़ज़ल की मासूमियत को महसूस करेंगी।

धरोहर

मिर्ज़ा ग़ालिब

गुलशन को तिरी सोहबत अज़-बस-कि ख़ुश आई है
हर ग़ुंचे का गुल होना आग़ोश-कुशाई है

वाँ कुंगुर-ए-इस्तिग़्ना हर-दम है बुलंदी पर
याँ नाले को और उल्टा दावा-ए-रसाई है

अज़-बस-कि सिखाता है ग़म ज़ब्त के अंदाज़े
जो दाग़ नज़र आया इक चश्म-नुमाई है

ISSN:2583-8849